



**HINDI B – STANDARD LEVEL – PAPER 1**  
**HINDI B – NIVEAU MOYEN – ÉPREUVE 1**  
**HINDU B – NIVEL MEDIO – PRUEBA 1**

Monday 6 May 2002 (morning)  
Lundi 6 mai 2002 (matin)  
Lunes 6 de mayo de 2002 (mañana)

1 h 30 m

---

**TEXT BOOKLET – INSTRUCTIONS TO CANDIDATES**

- Do not open this booklet until instructed to do so.
- This booklet contains all of the texts required for Paper 1 (Text handling).
- Answer the questions in the Question and Answer Booklet provided.

**LIVRET DE TEXTES – INSTRUCTIONS DESTINÉES AUX CANDIDATS**

- Ne pas ouvrir ce livret avant d’y être autorisé.
- Ce livret contient tous les textes nécessaires à l’épreuve 1 (Lecture interactive).
- Répondre à toutes les questions dans le livret de questions et réponses.

**CUADERNO DE TEXTOS – INSTRUCCIONES PARA LOS ALUMNOS**

- No abra este cuaderno hasta que se lo autoricen.
- Este cuaderno contiene todos los textos requeridos para la Prueba 1 (Manejo y comprensión de textos).
- Conteste todas las preguntas en el cuaderno de preguntas y respuestas.

**पाठांश क: आई लव इंडिया**

विदेश किसे आकर्षित नहीं करता या फिर सिनेमा में विदेशी दृश्य देखना किसके मन को नहीं भाता। लेकिन हमारे “टीनएजर्स” को - उदाहरण - जाना पसंद नहीं। उनकी नज़र में अपना देश प्यारा देश यानी “आई लव माय इंडिया” - १ - महत्वपूर्ण है।

5

अभी हाल में मैगज़ीन द्वारा कराये गए एक सर्वेक्षण में इस बात का खुलासा हुआ है। सर्वेक्षण के दौरान टीनएजर्स से विदेश में बस जाने संबंधित उनकी राय पूछी गई थी। आपको यह - २ - हैरानी होगी कि आनेवाली पीढ़ी में पुरानी पीढ़ी की तरह विदेश में बस जाने की ललक नहीं है। उन्हें बसना तो सिर्फ अपने ही देश में अच्छा लगता है। पूछे गए टीनएजर्स में साठ फ़ीसदी से ज़्यादा बच्चों ने विदेशों में हमेशा के लिए बसने में अपनी - ३ - नहीं दिखाई।

10

अधिकांश टीनएजर्स की यह राय थी कि वे विदेश में - ४ - चाहते हैं, लेकिन वहाँ स्थायी रूप से रहना नहीं। पचास फ़ीसदी से ज़्यादा बच्चों का यह मत था कि वे मौका मिलने पर विदेश घूमने से पहले अपना देश देखना पसंद करेंगे। जहाँ तक काम करने के ख्याल से विदेश जाने की बात है तो ऐसे में भी बहुमत इस पक्ष में था कि अधिक से अधिक पाँच साल के लिए विदेश जाना चाहेंगे।

इसी ढंग से कुछ दिन पहले एक इंटरनेट चैनल पर दिखाए गए शो में यह बात सामने आई कि टीनएजर्स सिनेमा में विदेशी दृश्य से ज़्यादा देसी दृश्य देखना पसंद करते हैं। खासकर कश्मीर, मसूरी व ऊटी के। आधे से ज़्यादा बच्चों ने कहा कि उन्हें हिंदी सिनेमा में देश के विभिन्न स्थलों पर फिल्माए गए गाने ज़्यादा पसंद हैं।

15

हालाँकि उन्होंने यह भी कहा कि फिल्म “परदेस”, “ये दिल दीवाना दिल” और “हीरो नं. १” में विदेशों में फिल्माए गए गाने उन्हें अच्छे लगते हैं। अगर इन गानों को अपने देश के किसी स्थान पर फिल्माया गया होता तो भी उन्हें ये गाने उतने ही अच्छे लगते। फिल्म “परदेस” का गाना “आई लव माई इंडिया” टीनएजर्स के बीच “ये दिल दीवाना” गाने के मुकाबले ज़्यादा लोकप्रिय पाया गया। टीनएजर्स का मानना है अपने देश में प्राकृतिक और सुंदर स्थलों की कोई - ५ - नहीं है।

### पाठांश ख: स्नेहा चक्रधर से मुलाकात

ज़िंदगी - उदाहरण - कुछ अलग हटकर अपना नाम रोशन करना हर - ११ - की यह चाह होती है। लेकिन हम में - १२ - कुछ ही लोग अपनी अलग पहचान बना पाते हैं। और बहुत कम लोग होते हैं जो विद्यार्थी जीवन में ही एक अलग मुकाम हासिल कर लेते हैं। शास्त्रीय नृत्य - १३ - क्षेत्र में पहचान बनाने वाली ऐसी ही एक छात्रा हैं स्नेहा चक्रधर।

5 वर्तमान में स्नेहा लेडी श्रीराम कॉलेज से समाजशास्त्र में बीए (आनर्स) कर रही हैं। इन्होंने नृत्य की राह पर पाँच साल की उम्र से ही चलना शुरू कर दिया था। तब से ही वे पूरी लगन से नृत्य कर रही हैं। और आज वे नाट्य रत्न सम्मान से विभूषित भी हो चुकी हैं। यह सम्मान उन्हें नाट्य कलालयम संगीत संस्थान द्वारा प्रदान किया गया।

10 नृत्य की प्रारंभिक और विधिवत शिक्षा स्नेहा ने सुश्री रश्मि सक्सेना से ली। इनसे उसने पाँच साल तक भरतनाट्यम सीखा। भरतनाट्यम के साथ ही स्नेहा ने ओडिसी की शिक्षा ली है। नृत्य की शिक्षा स्नेहा ने जयजयवंती संगीत संस्थान के श्री आशीष कुमार दास से दो वर्ष तक ली। पिछले दो वर्षों से वे कलाइमामणि गुरु के.एन. दक्षिणामूर्ति के नाट्य कलालयम संगीत संस्थान की नृत्यार्थी हैं। इस संस्थान में वे के.एन. दक्षिणामूर्ति और उनकी पुत्री कुमारी वीनू दक्षिणामूर्ति से भरतनाट्यम सीख रही हैं।

स्नेहा के पिता श्री अशोक चक्रधर कहते हैं, “स्नेहा ने बोलना बाद में सीखा, उसने थिरकना पहले शुरू कर दिया था। बचपन में जब उसे कुछ खिलाना होता था तब हमें “झनक-झनक पायल बाजे” का कैसेट लगाना पड़ता था। स्नेहा कहती हैं कि मेरे माता-पिता ने हमेशा मुझे प्रेरित किया है। वे चाहते थे कि मैं कला क्षेत्र में जाऊँ। नृत्य में चूँकि मेरी बचपन से ही रुची थी इसलिए मैं ने इसी क्षेत्र को चुना।

15 पाश्चात्य संगीत और नृत्य की घुसपैठ के बारे में स्नेहा कहती हैं, “वैस्टर्न संगीत बुरा नहीं बशर्ते कि भारतीय संगीत और पाश्चात्य संगीत में सामंजस्य बना के रखा जाए”। फिलहाल स्नेहा -१४- दिल्ली में ही नृत्य प्रस्तुति दी है। वे दिल्ली से बाहर अभी प्रस्तुति नहीं देना चाहतीं क्योंकि उनका मानना है कि व्यक्ति - १५ - आधे ज्ञान के साथ मंच पर नहीं उतरना चाहिए वरना वह भीड़ में गुम होकर रह जाता है। वे कहती हैं कि मज़बूत वृक्ष तभी मिलता है जब उसकी जड़ें मज़बूत हों।



### पाठांश ग: यह अब बच्चों का खेल है

अब बंगलूर में सेना के जवानों के लिए ज़रूरी माने जाने वाली घुड़सवारी ताज़ा फैशन है। दरअसल शहर में घुड़सवारी के पाँच स्कूल ही नहीं हैं बल्कि निजी प्रशिक्षकों की संख्या भी २० तक पहुँच गई है। घुड़सवारी के स्कूल बड़े वर्ग को कई तरह की सुविधाएँ मुहैया कराते हैं। सामान्य व्यक्ति बंगलूर पैलेस ग्राउंड में जा सकता है तो पैसे वाले शहर से ३० किमी बाहर एंबेसी राइडिंग स्कूल जैसों में विदेशी प्रशिक्षकों की सेवा ले सकते हैं।

- 5 एंबेसी के मालिक जीतू वीरवानी कहते हैं, “हमारा मकसद बच्चे, वयस्क सभी को प्रशिक्षण की आधुनिकतम सुविधाएँ मुहैया कराना है।” एंबेसी के विशाल राजनकुटे परिसर में ८ वर्षीया शकीना अर्किस एक घोड़े पर बैठी हुई है। वह इसकी सवारी जुडिथ बिडप्पा की मदद से सीख रही है। बिडप्पा पेशे से अध्यापिका हैं और स्कूल में बच्चों को घुड़सवारी का प्रशिक्षण भी देती हैं। इससे उन्हें खुले वातावरण में जाने और ३५ घोड़ों में से चुनने का मौका मिल जाता है।
- 10 ३८ वर्षीया गृहणी सुनीता सिंह का भी मन घुड़सवारी सीखने को हमेशा लरज़ता रहता था मगर घर की मजबूरियाँ उन्हें जकड़े हुई थीं। वे कहती हैं, “अब मैं हफ्ते में एक बार घुड़सवारी सीखने का समय निकाल लेती हूँ। उन्हें शायद अपने छह साल के बेटे शक्ति पर घुड़सवारी के असर को देख प्रेरणा जगी। शक्ति मानसिक विकलांगता से पीड़ित है लेकिन उसने प्रिंसेस अकादमी (पीए) के विकलांगों के लिए विशेष कार्यक्रम के तहत बंगलूर पैलेस मैदान पर घुड़सवारी का सबक सीखा। पुष्पा बोपैया घुड़सवारी के इलाज संबंधी असर को स्वीकारती है। गृहणी बोपैया ने अमेरिका में इलाज के तहत घुड़सवारी की शिक्षा पाई और अब पीए में प्रशिक्षक हैं।
- 15 मैसूर के दिवंगत महाराजा की बेटा महाराजकुमारी मीनाक्षी देवी बंगलूर पैलेस के विशाल मैदानों पर ही घुड़सवारी सीखते बड़ी हुई हैं। अब उन्होंने इस मैदान को सामान्य जन के लिए खोल दिया है। वे कहती हैं, “हम चाहते हैं कि यह शाही खेल औसत भारतीय बच्चों को भी उपलब्ध हो।” जो लोग दिन में समय नहीं निकाल पाते, उनके लिए पीए “रात में सवारी” की सुविधा मुहैया कराता है।
- 20 घुड़सवारी विभिन्न वर्ग के सवारों में लोकप्रिय है। कई सवार ड्रेसेज यानी घुड़सवारी की संपूर्ण कला में माहिर हो रहे हैं। दरअसल, यह कला सिर्फ घोड़ा दौड़ाने तक ही सीमित नहीं है इसमें बल्कि घोड़े को साधना, उसे पेश करना और घोड़े से अपने आदेश का पालन कराना भी शामिल है। कई लोग तो सवारी सिर्फ चुस्त-दुरुस्त के लिए करते हैं।
- घुड़सवारी के अपने खतरे भी हैं - बदमिज़ाज घोड़ों से सामना और घुड़सवारों की हड्डियाँ टूटना आम बात है। चूँकि मामला बच्चों का होता है इसलिए प्रशिक्षक की भूमिका अहम हो जाती है।

### पाठांश घ: फतेहपुर सीकरी: यहाँ इतिहास बोलता है

- आगरा से लगभग चौतीस किलोमीटर की दूरी पर स्थित फतेहपुर सीकरी कभी शानोशौकत की जीती-जागती मिसाल था। गुजरात विजय के बाद बादशाह अकबर ने फतेहपुर सीकरी को अपनी राजधानी बनाने का फैसला किया। अकबर ने ही यहाँ
- 5 अनेक खूबसूरत महल, मस्जिदें, बाग, तथा स्तंभ बनवाए। सन् १५७५ में यह नगर बन कर तैयार हुआ, लेकिन अकबर यहाँ बस दस साल ही रह पाए। राजनीतिक कारणों व पानी की कमी हो जाने की वजह से अकबर को लाहौर जाना पड़ा। अकबर के जाने के साथ ही सीकरी की शानोशौकत सब खत्म हो गई। अब वहाँ अकबर के बनवाए कुछ ही भवन शेष रह गए हैं लेकिन वे गुजरे ज़माने की भव्यता को बखूबी बयान करते हैं।
- 10 नौ किलोमीटर के घेरे में बसा सीकरी तीन ओर से पचास फीट ऊँची पत्थर की दीवारों से घिरा है। इन दीवारों में ही दिल्ली दरवाज़ा, आगरा दरवाज़ा, ग्वालियर दरवाज़ा, अजमेरी दरवाज़ा, मथुरा दरवाज़ा, चंद्रफूल तथा बीरबल दरवाज़ा नाम से सात दरवाज़े बने हैं। सीकरी में देखने लायक स्थानों में नौबतखाना, शाही खज़ाना, दीवाने आम, दीवाने खास हैं। दीवाने खास के पीछे की ओर खास महल है। इसके पश्चिम में पाँच मंजिला पंचमहल है। इसके पश्चिम में स्थित एक विशाल आंगन में सफ़ेद तथा काले संगमरमर के बर्गाकार पत्थरों से चौपड़ का खेल बना हुआ है। इसपर सम्राट अपने संगी-साथियों के साथ मोहरे रूपी
- 15 दास-दासियों की मदद से खेला करते थे।
- दर्शनीय महलों में मरियम महल, जोधाबाई महल, बीरबल महल अपनी खूबसूरती से सब का मन मोह लेते हैं। सीकरी का सब से बड़ा भवन जामा मस्जिद है। सम्राट अकबर ने शेख सलीम चिश्ती की इच्छानुसार मक्का की मस्जिद के समान मस्जिद यहाँ बनवाई थी। इसके आंगन में ही शेख सलीम चिश्ती की दरगाह है। यहाँ हर साल भव्य उर्स का आयोजन होता है, लाखों लोग
- 20 इसमें शरीक होते हैं।
- दक्षिण की अपनी विजय के उपलक्ष्य में सम्राट अकबर ने १६०२ में बुलंद दरवाज़े का निर्माण करवाया था। यह विश्व का सबसे ऊँचा दरवाज़ा है। लाल रंग से बने हुए दरवाज़े में सफ़ेद संगमरमर का खूबसूरत काम किया गया है। इसके ऊपर अनेक छोटे-छोटे गुंबद बने हैं।
- 25 आगरा शहर से रेल तथा सड़क मार्ग से सीकरी आसानी से जाया जा सकता है। यहाँ जाने के लिए सबसे अच्छा मौसम अक्टूबर से मार्च तक का है। पर्याप्त मात्रा में पीने का पानी साथ ले जाना ना भूलें।

